साहित्य और सिनेमा

Literature & Cinema

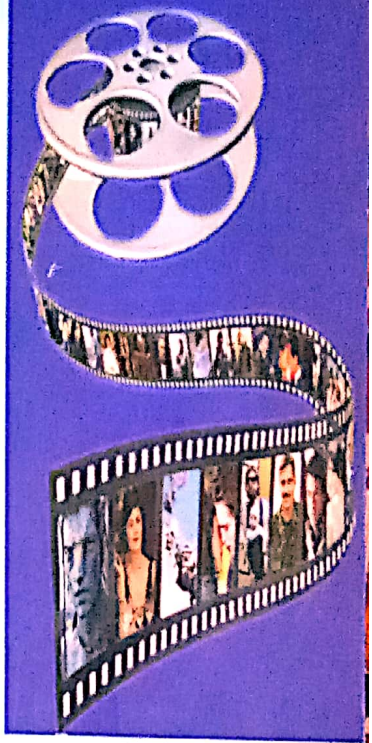

सम्पादक (हिंदी)
डॉ. शीला भास्कर
Editor (Hindi)
Dr. Sheela Bhaskar

सम्पादक (अंग्रेजी):
श्रीमती स्वपना के. जाधव
Editor (English)
Smt. Swapna K. Jadhav

Scanned with CamScanner

साहित्य और सिनेमा

(20 जनवरी 2018 को आयोजित
एक दिवासीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सग्रहीत आलेख)

ISBN : 978-93-5291-910-9

प्रधान संपादक	:	डॉ. शीला भास्कर (हिंदी)
कॉपी राइट	:	संपादकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2018
शब्द सज्जा एवं मुद्रक	:	भास्कर आर्ट मीडिया, हुब्बल्ली
मूल्य	:	₹ 500.00

सभी हक सुरक्षित है (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल, सहमत होंगें ही ऐसा नहीं है।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं। अतः संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

Scanned with CamScanner

81. हिंदी फिल्मों में मजदूरों के स्थितिगति 256
• श्रीमती एम. एन. होम्बाली

82. हिन्दी सिनेमा में नारी : विविध रूप 257
• जय प्रकाश

83. हिंदी सिनेमा में स्त्री विमर्श 260
• गीतांजली डी. सुखसार

84. असग़र वजाहत के कहानी साहित्य में सिनेमा की झलक 263
• राघवेंद्र वी मिस्किन

85. हिंदी सिनेमा में स्त्री विमर्श 266
• परवीनबानु, सैयदसाब, कलकेरी

86. साहित्य और सिनेमा एक चिंतन 268
• डॉ शबिना एम. हावेरिपेट

87. साहित्य समाज और सिनेमा 269
• डॉ. मीनाक्षी. बी. पाटील

88. हिन्दी फिल्मी गीतों में पर्यावरण : बारिश 272
• डॉ. राजशेखर. उ . जाधव

89. हिन्दी साहित्य और ससनेमा - एक चिंतन 275
• शर्मीला परवीन

90. हिन्दी फ़िल्मी गीतों में पर्यावरण 279
• डॉ. श्रीमती अभया जी. देवदास.

91 भारतीय सिनेमा और हिन्दी 285
• प्रो. इरण्ण जे.

92 हिन्दी साहित्य और सिनेमा - एक चिंतन 287
• शिल्पा टी.

93 साहित्यकार राही मासूम रजा का हिन्दी फिल्मों में योगदान 291
• डॉ. एल. पी. लमाणी

Scanned with CamScanner

87

साहित्य समाज और सिनेमा

डॉ. मीनाक्षी. बी. पाटील
हिन्दी विभाग
बसवेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाड़ी
जिला- विजयपुर

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। समाज का संपूर्ण प्रतिबिंब हमें तत्कालीन साहित्य में दिखाई देता है। समाज में व्याप्त आशा-निराश, सुख?दुःख, उत्साह?हताशा जैसे भाव साहित्य को प्रभावित करते हैं और इन्हीं से साहित्य के स्वरुप का निर्धारण होता है। दुनिया के प्रत्येक देश में चाहे वह विकसित हो, विकासशील हो या अविकसित हो वहाँ साहित्य अवश्य ही रचा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यता है कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है। 1 साहित्य समाज को प्रतिबिंबित करता है।

साहित्य में व्यक्ति और समाज को प्रभावित करने की अपार क्षमता होती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "साहित्य" शब्द से मिलने के भाव का बोध होता है। वह केवल भाव-भाव का, भाषा-भाषा का, ग्रंथ-ग्रंथ का मिलन नहीं, अपितु मानव के साथ मानव का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यन्त अंतरंग मिलन भी है। जो कि साहित्य के अतिरिक्त किसी अन्य विधा में मिलना सम्भव नहीं है।[2] साहित्यकार समाज का ही एक अंग होता है। समाज में रहकर वह चिन्तन-मनन करता है। वह समाज की भावनाओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

जब बात साहित्य, समाज और सिनेमा की हो तो यह कहना अनुचित न होगा कि साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्य तथा सिनेमा दोनों ही ऐसे माध्यम हैं जिसमें समाज को बदलने की क्षमता सबसे अधिक होती है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि सिनेमा साहित्य से अधिक प्रभावशाली और सामान्य जनता तक पहुँचने का सरल माध्यम है। सिनेमा आधुनिक युग में मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन भी बन गया है। आलें रॉबग्रिए का कहना है कि "सिनेमा - भावुकता और प्रतिकात्मता से रहित शुद्ध कला कृति है।"[3] हमारा अधिकांश साहित्य या तो वास्तविक जीवनकाल का एक संक्षिप्त संस्करण होने का प्रयत्न है या फिर किसी साहित्यिक कृति की हू-ब-हू अनुकृति होने का प्रयत्न। सिनेमा में विभिन्न नाट्य एवं ललित कलाओं का सम्मिश्रण है। सिनेमा ने मनुष्य के समाज और उसके वातावरण को परिवर्तित कर दिया है। यह वैचारिक क्रांति का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। आधुनिक जीवन शैली से तनाव ग्रस्त मानव मन को तनाव से मुक्त कराने के लिए कई आधुनिक साधन हैं, उनमें सिनेमा सबसे लोकप्रिय है।

अमेरिका के वैज्ञानिक टामस एलवा एडिसन ने सन् 1894 ई. में सिनेमा का आविष्कार किया। उस समय केवल मूक फिल्में ही बनती थीं। इसके कई वर्षों के पश्चात डाडस्टे नामक वैज्ञानिक ने फिल्मों में ध्वनि देने में सफलता प्राप्त की। अमेरिका से इंग्लैंड होता हुआ सिनेमा ने भारत में प्रवेश किया। फ्रांस के लुमियेर ब्रदर्स ने सन् 1896 ई. में मुंबई के एक होटेल में चित्रों को चलाकर दिखाया। इससे प्रेरणा ग्रहण कर "दादासाहब धुंडीराज गोविन्द फालके" ने भारतीय सिनेमा की नींव रखी। उन्होंने पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर फिल्में बनायी।

Scanned with CamScanner

सन् 1913 ई. में प्रथम भारतीय फिल्म "हरिश्चंद्र" बनायी, जो मूक थी। "भारत में बननेवाली पहली फीचर फिल्म भी आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक "हरिश्चंद्र" से प्रेरित थी।"। मूक फिल्मों के बाद "टॉकी" फिल्म बनाए गए। "विश्व की पहली बोलती फिल्म थी "द जैज सिंगर" जिसे अमेरिकी कंपनी वार्नर ब्रदर्स ने सन् 1926 में बनाया था।" [5] इसके बाद भारत में 14 मार्च 1931 ई. में अर्देशियर ईरानी ने "इंपीरियल" फिल्म कंपनी के तहत सर्वप्रथम बोलती फिल्म बनायी "आलम आरा"। यह फिल्म जोसेफ डेविड के फारसी नाटक पर आधारित थी और यह लगातार 8 सप्ताह तक हाऊस फुल चली थी।

इसके पश्चात पौराणिक कथाओं, संतों की जीवनी, धार्मिक विचारों को आधार बनाकर फिल्मों का निर्माण निरंतर हो रहा था। उसी समय साहित्य ने सिनेमा में प्रवेश किया। कहा जाता है कि "साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनाने की पहल बंगला ने की"[6] इसके पश्चात् हिन्दी के कई दिग्गज साहित्यकारों की रचनाओं को आधार बनाकर सिनेमा का निर्माण किया गया। भले ही प्रारंभिक सिनेमा पौराणिक आख्यानों या धार्मिक विचारों अथवा संतों के जीवन चरित्र पर थे, किन्तु जैसे-जैसे दिन बदलते गए वैसे-वैसे सिनेमा के विषय-वस्तुओं में भी परिवर्तन होने लगा। ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर ऐतिहासिक फिल्में बनीं। जिसके माध्यम से एक राष्ट्रवादी उत्तेजना को उत्पन्न किया जाने लगा। उसके बाद समाज में व्याप्त रूढ़िवादी रीति-रिवाज़ों, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास आदि कुरूतियों पर सामाजिक फिल्मों के माध्यम से प्रहार किया जाने लगा। फिल्मों में राजनीति, ज़मीन्दारी प्रथा, शोषण जैसे कई पहलुओं को शामिल किया गया। हिन्दी साहित्यकारों की बात की जाये तो "उपन्यास सम्राट" मुंशी प्रेमचंद के साहित्य पर अधिकाधिक फिल्मों का निर्माण हुआ है। "प्रेमचंद" की कहानी "मजदूर" पर "मोहन दयाराम भावनानी" ने सन् 1934 ई में "मिल मजदूर" फिल्म बनायी। फिल्म क्रांतिकारी भावना से ओत-प्रोत होने के कारण इस पर अनेक जगहों पर प्रतिबंध लगाया गया था। इन्हीं के द्वारा रचित "सेवासदन" को आधार बनाकर नानूभाई वकील ने फिल्म बनाई। सन् 1959 ई. में "हीरा मोती" फिल्म बनायी गयी, जो प्रेमचंद द्वारा रचित "दो बहिनों की कहानी" पर आधारित है। जिसका निर्देशन कृष्ण चोपड़ा ने किया था। कृष्ण चोपड़ा तथा ऋषिकेश मुकर्जी ने मिलकर प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास "गबन" पर सन् 1966 ई. में उसी नाम से फिल्म बनायी। सत्यजीत रॉय ने प्रेमचंद द्वारा रचित "शतरंज के खिलाड़ी" तथा "सद्गति" जैसी कहानियों से प्रभावित होकर "शतरंज के खिलाड़ी" को सन् 1977 ई. में सिनेमा का रुप दिया। सद्गति शीर्षक से सन 1981 ई. में टेलीफिल्म बनायी। इनके अतिरिक्त अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा, सेठ गोविन्ददास, चतुरसेन शास्त्री, मिर्जा हादी रुसवाँ, महाश्वेतादेवी, चेतन भगत आदि की अनेक साहित्यिक कृतियों पर भी फिल्में बनी हैं।

'फणीश्वरनाथ रेणु' की कहानी "मारे गए गुलफाम" पर बांसु भ ाचार्य ने "तीसरी कसम" बनायी। राजेंद्र यादव के "सारा आकाश" उपन्यास और मन्नू भंडारी की कहानी "यही सच है" को आधार बनाकर "रजनीगंधा" बनी। शरद्चंद्र चटर्जी के "देवदास" उपन्यास पर तीन बार फिल्म बनी। पहली बार "बरुआ" कृत तथा दुसरी बार "विमल रॉय" द्वारा तथा तीसरी बार "संजय लीला बंसाली" के द्वारा निर्मित की गई। चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास पर भी बी. आर. फिल्मस् के अंतर्गत "धर्मपुत्र" फिल्म बनी थी।

हिन्दी के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य को आधार बनाकर फिल्में बनायी गयीं। जिनका यहाँ संक्षिप्त आकलन करने का प्रयास किया गया है। उर्दू साहित्य पर कई फिल्में बनी है। लेखक मिर्जा मोहम्मद हादी रुसवा की कृति "उमराव जान अदा" पर सन् 1918 ई. में मुज़फर अली के निर्देशन में "उमराव जान" फिल्म बनायी गई। अमृता प्रीतम का पंजाबी

Scanned with CamScanner

उपन्यास "पिंजर" पर चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने हिन्दी में इसी नाम से फिल्म बनायी है। गोवर्धन राम त्रिपाठी के गुजराती उपन्यास "सरस्वती चंद्र" को सन् 1968 ई. में गोविंद सरैया ने इसी नाम से फिल्म का निर्माण किया। सन् 1922 में शिशिरकुमार भादुड़ी जैसे प्रख्यात रंगकर्मी ने नरेश के साथ "अंधारे आलो" का निर्देशन किया। यह फिल्म शरदबाबू के उपन्यास पर बनी थी।"[7] सन् 1929 ई. में नरेश मित्र ने शरदबाबू की कृति "देवदास" पर फिल्म बनायी। सन् 1931 ई. में शरदबाबू की और एक कृति "देना पावना" पर इसी नाम से निर्देशक प्रेमांकुर आतोर्थी ने फिल्म बनायी। गुजराती के महान कथाकार पन्नालाल पटेल के उपन्यास के आधार पर सन् 1969 ई. में "कुंकु" फिल्म बनी जिसके निर्देशक थे, कांतिलाल राठौड़। आर. के. नारायण द्वारा विरचित "द गाइड" उपन्यास को आधार बनाकर सन् 1965 ई. में निर्माता–निर्देशक, देव आनंद–विजय आनंद ने "गाइड" बनायी।

सन् 1965 ई. के बाद कन्नड़ सिनेमा एक महत्वपूर्ण पडाव पर आ चुका था। इस समय कन्नड़ सिनेमा में साहित्य तथा साहित्याकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। "सिनेमा के क्षेत्र में कन्नड़ के श्रेष्ठतर साहित्यकारों ने अपना योगदान देना शुरू किया था। उन्होंने कन्नड़ सिनेमा की गरिमा को बढ़ाया था।"[8] कन्नड़ के साहित्यकार – कैलासं, कुवेंपु, गिरीश कार्नाड, द.रा.बेंद्रे, अरकलगूडू नरसिंगराय कृष्णराय आदि साहित्यकारों के कृतियों का प्रयोग सिनेमा के लिये किया गया है। 1960 में टी. वी. ठाकूर ने कृष्णमूर्ति पुराणिक के "धर्मदेवते" उपन्यास पर आधारित "करुणेये कुटंबद कण्णु" का निर्देशन किया। यह फिल्म कन्नड़ में कन्नड़ उपन्यास को आधार बनाकर फिल्मायी गयी प्रथम फिल्म थी।"[9] कुवेंपु द्वारा रचित कविताओं को सिनेमा में लिया गया है। "गौरी" सिनेमा में "याव जन्मद मैत्री", "दोणी सागली मुंदे होगली", "कलावती" सिनेमा में "कुहू–कुहू एनंत हाडुवा चिन्नद कंठद कोगिलेये", "मावन मगलु" सिनेमा में देशभक्ति पर आधारित कविता "नडे मुंदे नडे मुंदे हिग्गी नड़े मुंदे" को लिया गया है।

मूक फिल्मों से लेकर टॉकी फिल्मों तक आते–आते फिल्म निर्माण में नये–नये प्रयोग होते रहे। तकनीक के विकास के साथ फिल्म व्यवसाय में भी नये प्रयोगों का दौर आरंभ हुआ। जहाँ केवल पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं तथा आख्यानों को प्रधान बनाकर फिल्में बनायी जाती थी वहाँ साहित्य तथा साहित्यकारों को प्रवेश मिला। इससे भारतीय सिनेमा के मंच पर एक से एक बेहतरीन फिल्में देखने को मिलीं। जिसमें साहित्य, समाज और सिनेमा एक दूसरे के पूरक और पोषक बनते दिखीई देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र, पृ. सं–28
2. हिन्दी निबंध सौरभ, श्यामचंद्र कपूर, पृ. सं–4
3. आलेख– सिनेमा: अभिव्यक्ति का नहीं अन्वेषण का माध्यम, कमल स्वरुप
4. साहित्य सिनेमा और समाज, जनसत्ता, दिसंबर 11, 2016
5. युगशिल्पी, अंक–8 2011, लेख–इतिहास के आइने में भोजपुरी सिनेमा, डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव, पृ.सं–72
6. युगशिल्पी, अंक–8 2011, लेख– गुजराती सिनेमा, कनुभाई पटेल, पृ. सं–15
7. युगशिल्पी, अंक–8 2011, लेख–गुजराती सिनेमा, कनुभाई पटेल, पृ. सं–15
8. युगशिल्पी. अंक–8 2011, लेख– कन्नड़ सिनेमा का सुहाना सफर ? राजशेखर जाधव, पृ. सं– 52
9. युगशिल्पी. अंक–8 2011, लेख– कन्नड़ सिनेमा का सुहाना सफर ? राजशेखर जाधव, पृ. सं– 52

Scanned with CamScanner